वर्ष-19 अंक-184 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, शुक्रवार 08 मई 2026

कानपुर से प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात, औरैया में प्रसारित

दैनिक
नगर छाया
आप की आवाज़.....

RNI No.- UPHIN/2007/27090

होने वाले इस महोत्सव में श्री श्री राधा माधव जी उत्सव में पहली बार इस्कॉन कानपुर द्वारा श्री श्री जाएगा। कार्यक्रम के दौरान हरे कृष्ण महामंत्र का अपील की है।

रासायनिक उर्वरकों के अधिक प्रयोग से मिट्टी की सेहत हो रही खराब: वैज्ञानिक

फर्रुखाबाद। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र जाजपुर बंजारा द्वारा विकासखंड बढ़पुर के ग्राम नगला जैतपुर में विशेष जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में फसलों में संतुलित उर्वरकों के प्रयोग को लेकर कृषकों एवं कृषक महिलाओं को जागरूक किया गया। इस अवसर पर भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों एवं कृषि विज्ञान केंद्र के विशेषज्ञों ने किसानों को मृदा स्वास्थ्य और संतुलित खेती के महत्व के बारे में जानकारी दी। प्रधान वैज्ञानिक डा. इन्द्र प्रकाश सिंह ने किसानों को भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए गोबर की सड़ी खाद के प्रयोग तथा फसल चक्र में दैचा एवं ग्रीष्मकालीन दलहनी फसलों जैसे मूंग और उड़द को शामिल करने की सलाह दी।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. सुजयानन्द जी.के. ने मक्का में लगने वाले कीटों की रोकथाम पर विस्तार से जानकारी दी। वहीं वैज्ञानिक डा. प्रियंका लाल ने विभिन्न फसलों की लागत कम करने के उपायों पर चर्चा की। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी डा. भूपेन्द्र सिंह ने बताया कि आवश्यकता से अधिक रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग मृदा स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, साथ ही किसानों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी बढ़ाता है। वैज्ञानिक डा. महेन्द्र राजभर ने अच्छी प्रजातियों के चयन एवं संतुलित उर्वरकों के उपयोग पर जोर देते हुए दुधारू पशुओं के संतुलित आहार, टीकाकरण एवं डीवर्मिंग की जानकारी दी। डा. अरविन्द कुमार ने खरीफ फसलों में जैविक खाद और संतुलित उर्वरकों के प्रयोग को आवश्यक बताया। वहीं डा. जगदीश मिश्रा ने ऊसर भूमि सुधार हेतु जिप्सम और धान के पुआल के प्रयोग की सलाह देते हुए मृदा जांच के बाद ही उर्वरकों के उपयोग पर बल दिया। कार्यक्रम के अंत में गृह वैज्ञानिक डा. दिव्या कौशिक ने कृषक महिलाओं को संतुलित आहार के महत्व के बारे में जानकारी दी तथा करौंदा और आंवला की पौष्टिकता पर विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम में 25 कृषक महिलाओं सहित कुल 58 किसानों ने प्रतिभाग किया।

पटला स्थित साप्ताहिक बाजार में चुकी है और जल्द ही लाइट लग है।

"रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग बना खतरा, वैज्ञानिकों ने किसानों को सिखाया 'संतुलित खेती' का मंत्र"

दि ग्राम टुडे, संजय मौर्य यूपी हेड। कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, जाजपुर बंजारा द्वारा विकासखण्ड बढ़पुर के ग्राम नगला जैतपुर में विशेष जागरूकता अभियान आयोजित कर किसानों एवं कृषक महिलाओं को संतुलित उर्वरकों के प्रयोग और मृदा स्वास्थ्य संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया। कार्यक्रम में भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर के वैज्ञानिकों ने भी सहभागिता कर किसानों को आधुनिक एवं टिकाऊ खेती के गुर सिखाए।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. इन्द्र प्रकाश सिंह ने कहा कि भूमि की उर्वरा शक्ति बनाए रखने के लिए किसानों को गोबर की सड़ी खाद का प्रयोग बढ़ाना चाहिए तथा फसल चक्र में ढैंचा, मूंग एवं उड़द जैसी दलहनी फसलों को शामिल करना चाहिए। इससे मिट्टी की गुणवत्ता सुधरती है और उत्पादन क्षमता भी बढ़ती है। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सुजयानन्द जी.के. ने मक्का में लगने वाले कीटों और उनके नियंत्रण के उपायों पर विस्तार से जानकारी दी। वहीं वैज्ञानिक डॉ. प्रियंका लाल ने खेती की लागत कम करने के प्रभावी उपाय बताते हुए किसानों को वैज्ञानिक तकनीकों के उपयोग की सलाह दी। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि आवश्यकता से अधिक रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग मृदा स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों के लिए नुकसानदायक है। इससे किसानों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ भी बढ़ता है। उन्होंने संतुलित उर्वरक प्रयोग और मृदा परीक्षण के महत्व पर जोर दिया।

वैज्ञानिक डॉ. महेन्द्र राजभर ने किसानों को बेहतर उत्पादन हेतु उन्नत प्रजातियों के चयन एवं संतुलित उर्वरकों के उपयोग की सलाह दी। साथ ही दुधारू पशुओं के संतुलित आहार, टीकाकरण एवं डीवर्मिंग के महत्व के बारे में भी जानकारी दी। वैज्ञानिक डॉ. अरविन्द कुमार ने खरीफ फसलों में जैविक खाद और संतुलित उर्वरकों के प्रयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता बताई। वहीं डॉ. जगदीश मिश्रा ने ऊसर भूमि सुधार हेतु जिप्सम एवं धान के पुआल के उपयोग की जानकारी देते हुए कहा कि इससे मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों की मात्रा बढ़ती है और भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहती है। कार्यक्रम के समापन पर गृह वैज्ञानिक डॉ. दिव्या कौशिक ने कृषक महिलाओं को संतुलित आहार के महत्व से अवगत कराया तथा करौंदा एवं आंवला की पौष्टिकता पर विस्तृत चर्चा की। इस जागरूकता अभियान में 25 कृषक महिलाओं एवं 33 किसानों ने प्रतिभाग कर वैज्ञानिकों से खेती से जुड़ी उपयोगी जानकारियां प्राप्त कीं।

अमर उजाला 08/05/2026

किसानों को दी संतुलित खेती की सलाह

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के अधीन कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा ग्राम नगला जैतपुर, विकासखंड बढ़पुर में विशेष जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। इसमें किसानों और कृषक महिलाओं को फसलों में संतुलित उर्वरकों के प्रयोग और मृदा स्वास्थ्य के संरक्षण के बारे में जानकारी दी गई। भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. इंद्र प्रकाश सिंह ने कहा कि लगातार रासायनिक उर्वरकों के अधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरा शक्ति घट रही है। उन्होंने किसानों को गोबर खाद के उपयोग के साथ फसल चक्र अपनाने की सलाह दी। वैज्ञानिक डॉ. महेंद्र राजभर, डॉ. अरविंद कुमार, डॉ. जगदीश मिश्रा ने विभिन्न जानकारियां दीं। (ब्यूरो)

गया है। जासं

रासायनिक उर्वरक बिगाड़ रहे मिट्टी की सेहत

कानपुर : चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र, ग्राम नगला जैतपुर में संतुलित उर्वरक प्रयोग विषय पर विशेष जागरूकता अभियान चला। विज्ञानी डा. इन्द्र प्रकाश सिंह ने खेतों में गोबर की सड़ी खाद, ढैंचा तथा मूंग-उड़द जैसी दलहनी फसलों को फसल चक्र में शामिल करने के बारे में बताया। 58 किसान कार्यक्रम में शामिल हुए। वि.

दैनिक जागरण 08/05/2026

रासायनिक उर्वरकों के अधिक प्रयोग से खराब होती मिट्टी की सेहत

कानपुर, 7 मई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित जाजपुर बंजारा स्थित कृषि विज्ञान केंद्र ने ग्राम नगला जैतपुर, विकासखण्ड बढ़पुर में आयोजित विशेष जागरूकता अभियान के अंतर्गत फसलों में संतुलित उर्वरकों के प्रयोग पर भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर के वैज्ञानिकों के साथ केवीके के वैज्ञानिकों ने कृषक एवं कृषक महिलाओं को जागरूक किया गया। उक्त कार्यक्रम में भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर के प्रधान वैज्ञानिक डा. इन्द्र प्रकाश सिंह ने भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने हेतु कृषकों को अपने खेतों पर गोबर की सड़ी खाद के प्रयोग के साथ-साथ फसल चक्र में ढंचा व ग्रीष्म कालीन दलहनी फसलों जैसे-मूंग, उर्द का समावेश करने पर जोर दिया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. सुजयानंद जी के में मक्का में लगने वाले कीटों के सम्बंध में विस्तार से चर्चा की। वैज्ञानिक डा. प्रियंका लाल ने विभिन्न फसलों में लगनें वाली लागत में कैसे कमी लायी जाये के सम्बंध में विस्तार से चर्चा की। प्रभारी डा. भूपेन्द्र सिंह ने बताया कि आवश्यकता के यादा रसायनिक उर्वरकों का प्रयोग करने से मृदा के सेहत एवं पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है साथ ही कृषकों पर अनावश्यक व्ययभार पड़ता है। केन्द्र के वैज्ञानिक डा.महेन्द्र राजभर ने बताया कि रसायनिक उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करने के साथ-साथ फसलोत्पादन हेतु अच्छी प्रजातियो का चयन कर बुवाई करें। कार्यकम के अंत में केन्द्र के गृह वैज्ञानिक ड. दिव्या कौशिक ने कृषक महिलाओं को परिवार के संतुलित आहार के महत्व के बारे में बताया। जिसमें करौंदा एवं आंवला की पौष्टिकता के बारे में विस्तृत चर्चा की। उक्त कार्यक्रम में 25 कृषक महिलाओं एवं 33 कृषकों ने भाग किया।

किसानों को खेती के बारे में जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक।

CMYK

वर्ष-19 अंक-184 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, शुक्रवार 08 मई 2026

कानपुर से प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात, औरैया में प्रसारित

दैनिक नगर छाया

RNI No.- UPHIN/2007/27090

आप की आवाज़.....

सीएसए में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई-7 द्वारा चलाया गया गाजर घास उन्मूलन अभियान

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई-7 के तत्वावधान में गाजर घास उन्मूलन अभियान चलाया गया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर सहभागिता करते हुए विश्वविद्यालय परिसर में गाजर घास हटाने का कार्य किया। कार्यक्रम का शुभारंभ इकाई-7 के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. उमा नाथ शुक्ल द्वारा अतिथियों के स्वागत के साथ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. वी.के. त्रिपाठी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. रश्मि सिंह उपस्थित रहीं। अपने संबोधन में डॉ. वी.के. त्रिपाठी ने गाजर घास से होने वाले दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह खरपतवार मानव स्वास्थ्य, पशुओं एवं कृषि फसलों के लिए अत्यंत हानिकारक है। उन्होंने विद्यार्थियों से इसके उन्मूलन के लिए जागरूकता फैलाने का आह्वान किया। वहीं डॉ. रश्मि सिंह ने कहा कि स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण के लिए ऐसे अभियान अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने युवाओं को सामाजिक एवं पर्यावरणीय दायित्वों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा दी। अभियान में लगभग 50 छात्र-छात्राओं ने सक्रिय भागीदारी निभाई। इस दौरान डॉ. सोमेन्द्र वर्मा भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक जागरूकता की भावना विकसित करना रहा।

सीएसए में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई-7 द्वारा चलाया गाजर घास उन्मूलन अभियान

दि ग्राम टुडे, रितेश शर्मा।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों द्वारा गाजर घास उन्मूलन कार्यक्रम चलाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ इकाई–7 के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. उमा नाथ शुक्ल द्वारा अतिथियों के स्वागत से हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. वी.के. त्रिपाठी अधिष्ठाता उद्यान महाविद्यालय एवं निदेशक प्रसार तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. रश्मि सिंह, कार्यक्रम समन्वयक उपस्थित रहीं। डॉ. वी.के. त्रिपाठी ने अपने संबोधन में गाजर घास से होने वाले दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह खरपतवार मानव स्वास्थ्य, पशुओं तथा कृषि फसलों के लिए अत्यंत हानिकारक है। उन्होंने विद्यार्थियों से इसके उन्मूलन हेतु जागरूकता फैलाने का आह्वान किया। इस अवसर पर डॉ. रश्मि सिंह ने गाजर घास उन्मूलन अभियान के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण के लिए ऐसे कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने युवाओं को सामाजिक एवं पर्यावरणीय दायित्वों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा दी। अभियान में लगभग 50 छात्र–छात्राओं ने सक्रिय सहभागिता की और परिसर में गाजर घास हटाने का कार्य किया। इस दौरान डॉ. सोमेन्द्र वर्मा भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक जागरूकता की भावना विकसित करना रहा।

अमर उजाला 08/05/2026

सीएसए में हटाई गई गाजर घास

कानपुर। सीएसए में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई-7 के तत्वावधान में गाजर घास उन्मूलन अभियान चलाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत इकाई-7 के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. उमानाथ शुक्ल ने की। मुख्य अतिथि उद्यान महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं प्रसार निदेशक डॉ. वीके त्रिपाठी और विशिष्ट अतिथि कार्यक्रम समन्वयक डॉ. रश्मि सिंह रहीं। डॉ. वीके त्रिपाठी ने कहा कि गाजर घास एक खतरनाक खरपतवार है जो मानव स्वास्थ्य, पशुओं और फसलों के लिए हानिकारक है। अभियान में करीब 50 छात्र-छात्राओं ने विवि परिसर में गाजर घास हटाने का कार्य किया। (ब्यूरो)

गाजर घास के खिलाफ अभियान चलाते एनएसएस के छात्र।

एनएसएस ने चलाया गाजर घास उन्मूलन अभियान

कानपुर, 7 मई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों ने गाजर जास उन्मूलन कार्यक्रम चलाया । कार्यक्रम का शुभारंभ इकाई-7 के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. उमा नाथ शुक्ला ने अतिथियों के स्वागत से किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. वी.के. लिपाठी अधिष्ठाता उद्यान महाविद्यालय एवं निदेशक प्रसार तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. रश्मि सिंह, कार्यक्रम सम9वयक उपस्थित रहीं। डॉ. वी.के. त्रिपाठी ने अपने संबोधन में गाजर जास से होने वाले दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह खरपतवार मानव स्वास्थ्य, पशुओं तथा कृषि फसलों के लिए अत्यंत हानिकारक है। उन्होंने विद्यार्थियों से इसके उन्मूलन हेतु जागरूकता फैलाने का आह्वान किया। इस अवसर पर डॉ. रश्मि सिंह ने गाजर घास उन्मूलन अभियान के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण के लिए ऐसे कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने युवाओं को सामाजिक एवं पर्यावरणीय दायित्वों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा दी। अभियान में लगभग 50 छात्र-छात्राओं ने सक्रिय सहभागिता की और परिसर में गाजर घास हटाने का कार्य किया। इस दौरान डॉ. सोमेन्द्र वर्मा भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक जागरूकता की भावना विकसित करना रहा।